ई.एच.आई.-06

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
जुलाई 2025 और जनवरी 2026 सत्रों के लिए

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-06
पाठ्यक्रम शीर्षक : चीन और जापान का इतिहास (1840-1949)

इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

सत्रीय कार्य
2025-2026

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी.
पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-06

प्रिय विद्यार्थी,

जैसा कि आपको बी.डी.पी. की कार्यक्रम दर्शिका में बताया गया है आपको इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए एक अध्यापक जांच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) करना होगा।

सत्र	जमा करने की तिथि	कहां जमा करना है
जुलाई 2025 सत्र के लिए	**31 मार्च 2026**	**पूरा किया हुआ सत्रीय कार्य अपने केंद्र के संयोजक के पास जमा करा दें।**
जनवरी 2026 सत्र के लिए	**30 सितम्बर 2026**	

सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ लीजिए।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें :

सत्रीय कार्य करने से पहले ध्यान रखें : सामाजिक विज्ञानों में किसी भी तरह के लेखन के लिए चार सोपान आवश्यक हैं। ये हैं (क) योजना (ख) वस्तु चयन (ग) प्रस्तुतीकरण (घ) व्याख्या

क) **योजना :** आपसे क्या प्रश्न पूछा गया है और उत्तर में क्या लिखना है। इस पर विचार कीजिए। इकाइयों का ठीक तरह से अध्ययन कीजिए। कुछ अतिरिक्त जानकारी चाहें तो पुस्तकालय का उपयोग कीजिए।

यह देखें कि प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना है या 250 शब्दों में या सिर्फ 100 शब्दों में। बड़े प्रश्नों के लिए विवरणों के साथ व्याख्या भी करनी होगी। तीसरे प्रकार के प्रश्न के उत्तर में संगत विवरणों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

ख) **वस्तु चयन :** उत्तर देने के लिए आपको सही तथ्यों तथा विवरणों का चयन करना होगा। इसके लिए आप (i) अपनी इकाइयों से नोट्स लें (ii) तथ्यों को ध्यान से देखें और उत्तर के लिए अनावश्यक विवरण निकाल दें और (iii) उत्तर का पहला खाका लिख लें। इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि आप उत्तर में क्या सूचनाएं/विवरण प्रस्तुत करना चाहते हैं।

ग) **प्रस्तुतीकरण :** अब आप उत्तर का दूसरा खाका तैयार करें। इससे आप अपने विचारों को स्पष्टता से व्यक्त कर सकेंगे। आप यह भी जान सकेंगे कि दी गयी शब्द सीमा में आप बात कैसे कह सकते हैं।

उत्तर का तीसरा और अंतिम प्रारूप तैयार कीजिए और देखिए कि आपने सारी आवश्यक बातें अपेक्षित शब्द सीमा में प्रस्तुत की हैं या नहीं।

घ) **व्याख्या :** इतिहास लेखन में व्याख्या की प्रक्रिया का अनन्य स्थान है। आपकी योजना तथा वस्तु चयन में भी व्याख्या की झलक दिखाई देगी। संभवतः, शायद, क्योंकि, इसलिए, आदि शब्दों के साथ आपके वक्तव्य व्याख्या की झलक देते हैं। यहां आपको ध्यान रखना होगा कि आपके तथ्य आपके वक्तव्य का समर्थन करते हैं अथवा नहीं।

टिप्पणी : अगर आपके पास समय सीमित हो तो :

1) पहला प्रारूप तैयार करें, उत्तर की संगतता, शब्द सीमा, आदि पर ध्यान दें, और
2) अंतिम प्रारूप तैयार करें।

अब आप उत्तर लिखने के लिए तैयार होंगे।

अध्यापक जांच सत्रीय कार्य
ई.एच.आई.-06
चीन और जापान का इतिहास (1840-1949)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-06
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.आई–06 / ए.एस.टी. / टी.एम.ए. / 2025-2026
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सामने लिखे हैं।

भाग 1: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1) चीन पर अफीम युद्धों के कारणों और प्रभावों की व्याख्या कीजिए। **20**

अथवा

मेइजी पुनर्स्थापना क्या थी? मेइजी पुनर्स्थापना पर हुई बहस पर चर्चा कीजिए।

2) 1931 से जापान की विस्तारवादी नीति पर एक निबंध लिखिए। **20**

अथवा

चीनी राष्ट्रवाद के विकास की व्याख्या कीजिए। 1911 की क्रांति ने इसमें किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

भाग 2: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

3) शास्त्रीय काल में चीनी दार्शनिक विचारों की चर्चा कीजिए। **12**

अथवा

तोकुगावा राज्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4) एक सामाजिक शक्ति के रूप में चीनी पूंजीपति वर्ग के उदय की चर्चा कीजिए। **12**

अथवा

चीन में कुओमिन्तांग के उदय पर एक टिप्पणी लिखिए।

5) जापान और पश्चिम के बीच प्रारंभिक संपर्क पर एक टिप्पणी लिखिए। **12**

अथवा

अंतरयुद्ध काल में जापान के औद्योगिक विकास की व्याख्या कीजिए।

6) 1911 की क्रांति के बाद चीन में नई संस्कृति के उदय पर संक्षेप में चर्चा कीजिए। **12**

अथवा

जापान के आधुनिकीकरण में बुद्धिजीवियों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

भाग 3: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।

7) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए : **6+6**

(i) चीन में 4 मई, 1919 का आंदोलन
(ii) जापानी संविधान
(iii) हंगश्यू–चुआन और ईश्वर–पूजक संघ
(iv) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान में तेल आघात